BA-III (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - छह

इतिहास

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar,
Madhubani (LNMU)

'महावीर' शीर्षक कविताक भावार्थ

महावीर शीर्षक काव्य रचनाकार छथि कविवर मोहनजी। ई कविताक रचनामे हुनकर गुणगान क चर्चा भेल अछि। महावीर शीर्षक रचना गीत-नाद भजन-भाव खण्ड में संकलित अछि। एहि मे हनुमानजी कें गुण-गान कएलनि अछि। महावीर सागर कात मे ठाढ़ अछि। राम सैनिक आओर सुग्रीव हुनकर गुणगान क रहल अछि। ओहि पार जाथि आ माता सीताक खोजकें पूर्ण करथि। महावीर सागर लाँघि चलला, मुदा सुरसा बाट छेकि ठाढ़ भ जाइछ तखन महावीर हनुमान हुनिके मुँहमे पैसि छोट रूप धारण क बाहर भ जाइत छैक। लंका पहुँचलाह तखनहि माता सीता अशोकवाटिकामे गाछ नीचाँ नोर बहा रहल छलीह, ई देखि हनुमान जी

सीता माता के आँगा प्रभु श्रीरामजीके देल औंठी देख-जनि आ माता सीता के धीरज भेलन्हि। मारुति नन्दन सेहो प्रसन्नता भेल। अशोकवनमे हनुमानजी ने कतेको निशिचर आयल लड़बा-भिड़बा लेल रावण के यमपुरी पठौलनि। हनुमानजी ब्रह्मास्त्र सँ बान्हल गेल रावा-नक दरबारमे ल गेलनि रावण सँग खुब वार्तालाप भेलाक बाद हुनका नाङ्गरिमे आ कपड़ा बान्हि घी मे भींजाकऽ आगि लगा देल गेलनि आ हनुमान जी पुरा लंका नगरीके डाहि देलकनि। आ माता सीता लग आयलाह। माता सीता प्रसन्न भेलाह। सीता माता कहलनि औंहा जग मे सदा वन्दनीय रहब। रामक भक्त कतौ दुखी नहि भऽ सकैत आछि। माता सीतासँ आज्ञा ल राम सेवक सेवकोंगी मारुति नन्दन उड़ि चलल प्रभु श्रीरामक दर्शन करबाक लेल पवनपुत्र हनुमान भक्त शिरोमणि छिकाह।

= समाप्त =

Sanyal